4

कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा मुक्ति के 50 वर्षों में कोंकणी भाषा साहित्य ने अभूतपूर्व प्रगति की है। इसके पूर्व पुर्तगालियों के शासन काल में पुर्तुगीज राजकाज की भाषा होने के कारण कोंकणी मूलतः मौखिक रूप में प्रयुक्त होती थी। महाराष्ट्र की सीमा से लगे होने के कारण गोवा में मराठी भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रभाव विशेष रूप से था और आज भी है। लेकिन उस रूप में नहीं है, जिस रूप में 1961 के आसपास था। पुर्तुगीज सत्ता की समाप्ति पर गोवा की अस्मिता और भाषा को लेकर संकट खड़ा हो गया। यहाँ की जनता में कुछ लोगों का विचार था कि इसे महाराष्ट्र में या कर्नाटक में मिला दिया जाए। महाराष्ट्र के पक्ष में कुछ अधिक लोग थे लेकिन यहाँ की अधिकांश जनता ने गोवा के लिए स्वतंत्र राज्य की मांग की और कोंकणी को अपनी मातृभाषा स्वीकार किया। 1967 में जनमत के आधार पर गोवा को स्वतंत्र राज्य का दर्जा देते हुए इसे केंद्रशासित राज्य घोषित किया गया। 1987 में इसे स्वतंत्र राज्य की मान्यता मिली। कोंकणी और मराठी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

विगत पचास वर्षों में कोंकणी भाषा और साहित्य ने अभूतपूर्व प्रगति की है। मैं पिछले 25 वर्षों से कोंकणी साहित्य की प्रगति का साक्षी रहा हूँ। हम सभी जानते हैं कि किसी भी राज्य के भाषा एवं साहित्य पर वहाँ का परिवेशगत जीवन किसी न किसी रूप में हावी होता है। आज खनिज समस्या

3892 CHD/14—5A

को लेकर गोवा देश के मानचित्र पर अंकित है। कोंकणी के शीर्ष नाटककार एवं कथाकार पुंडलीक ना. नायक ने कुछ साल पहले 'अच्छेव' नामक उपन्यास की रचना की। इसमें उन्होंने श्रमिकों की जीवन-दशा और पर्यावरण पर खनिज के बुरे प्रभाव को चित्रित किया है। राजनीतिक परिदृश्य की बात करें तो इस वर्ष भारतीय जनता पार्टी ने दूसरी बार सत्ता हासिल की है। कोंकणी और अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई एवं सरकार से प्राप्त अनुदान को लेकर यहाँ पूरे वर्ष गहमा-गहमी मची रही। कोंकणी भाषा का रोमन और देवनागरी लिपि से संबंधित विवाद भी चर्चा के केंद्र में रहा। इन सबके बीच कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन हेतु प्रायोजित वार्षिक कार्यक्रमों और लेखन का सिलसिला चलता रहा। कोंकणी की लगभग सभी विधाओं में लेखन-कार्य हुआ है।

कोंकणी काव्य

गोवा-मुक्ति के पूर्व कोंकणी काव्य-लेखन का स्वरूप मूलतः राष्ट्रीय एवं सामाजिक भावनाओं को जाग्रत करने हेतु था। इसके साथ ही प्रकृति और प्रेम पर आधारित रचनाएँ लिखी गईं। मुक्ति के बाद कोंकणी रचनाओं पर भी भारतीय साहित्य की विभिन्न विधाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यहाँ मैं विशेष रूप से 2012 में प्रकाशित कोंकणी कविताओं का सर्वेक्षण कर रहा हूँ। कोंकणी के एकमेव दैनिक समाचार-पत्र में शोध एवं चिंतनपरक नियमित लेख लिखने वाली सुशीला निळकंठ हळर्णकार का 'पर्णकुटी' के बाद दूसरा काव्यसंग्रह 'संस्कारदीप' फरवरी 2012 में प्रकाशित हुआ जिसमें कुल 56 कविताओं को 'आत्मस्पंदन', 'मनस्पंदन' और 'भावस्पंदन' के अंतर्गत प्रकाशित किया गया है। इसमें कवयित्री ने आसपास की जिंदगी के अनुभवों और संस्कारों को वाणी दी है। ज्ञानपीठ से पुरस्कृत ज्येष्ठ कोंकणी साहित्यकार स्वर्गीय रवींद्रनाथ केलेकर के प्रति अपने मनोभावों को सुशीला ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

ज्ञानपीठ जैतिवंत / रविंद्रबाब, तुमकां नमन
तुमच्याच व्यक्तिमत्वान / फुल्लें गोंयकांचें मन
ऋषीतुल्य मूर्त तुमी / चैतन्यांचो वजरो तुमी

सिद्धहस्त लेखक तुमी / गोंयकारांची स्फूर्त तुमी।
गोंयांक दिलो नवो आकार / गोंयचीं सपनां केलीं साकार
रायटर-फायटर नामना तुमची / व्हडविकाय तुमच्या कार्याची
गोंयकारांचे अस्मितायेची / आराधना ही शारदेची।

इसी प्रकार *पार्वती माते, प्रेरणा, म्हजो बाबा, सत्कर्मांचीं फुलां, सपने म्हजें, मनाच्या प्रांगणांत, कथा म्हजी, कुळी, गरिबी, मातयेचो गंध* आदि कविताएँ संकलित हैं।

पी.एन. शिवानंद शेणै का नाम केरल में आधुनिकतम कोंकणी कवि के रूप में लिया जाता है। आपको गोवा के एकमेव दैनिक समाचार-पत्र 'सूनापरांत' ने जुलाई 1993 का मास कवि घोषित किया क्योंकि शेणै ने 'गोमंतक-90' गीत-काव्य की रचना की थी। केरल में इन्हें कोंकणी का आधुनिकतम कवि माना जाता है। कोंकणी दैनिक 'सूनापरांत' ने शेणै का चयन 'मास जुलाई 1993 का कवि' के रूप में किया। इस वर्ष प्रकाशित *किर किर आनी चांगपणाची सांत* 21 कविताओं के काव्य-संग्रह में कवि की विभिन्न भावबोध की कविताएँ हैं। प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में केरल के जीवन की गंध सर्वत्र विद्यमान है। केरल में मानसून पहले आता है और वर्षा भी खूब होती है।

आषाढांतलो पावस / पडून आसा
राति नातिल्लें / दीस नातिल्लें
दीस नातिल्लें पडून आसा / दोल्ले भरून रडचे
हे बायलेलो / बामुण कोण?

कवि ने केरल की वर्षा का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार इनकी *किरकिर, वेगळो, फरक 1, 2, 3, चरित्र, स्वप्न, कीर काणी सांगता, सीता, गोमंतक-90* आदि कविताएँ केरल जीवन के विविध रंग को प्रस्तुत करती हैं। इस संग्रह में *गोमंतक-90* लंबी कविता भी है जिस पर उन्हें मास कवि घोषित किया गया था। इसमें *भाग्य* नामक कविता में कवि के भाग्य-संबंधी मनोगत भाव की अभिव्यक्ति हुई है।

सूर्याक उदेवंचाक
केळका मळबच जाय
सूर्याक अस्तेवंचाक
पणजरा मळबच जाय
दिस्सलेकडे पडचाक
भाग्य जाय।

संतोष जगन्नाथ महाले का *बीं* काव्य-संग्रह मार्च 2012 में आया जिसमें कुल 42 कविताएँ संकलित हैं। कवि ने आसपास की जिंदगी के अनुभवों को विभिन्न कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया है। सत्ता व्यवस्था में कुर्सी प्राप्त करने की होड़ में किस कदर मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है और उसके लिए नाना प्रकार के संघर्षों का जन्म हो रहा है।

खुर्चीचे राजकरण
खुर्चेक लागून भर राजसभेंत
द्रौपदीचेंय जाता वस्त्रहरण
मान भोवमान मागून मेळना

समकालीन कविता के दौर में हिंदी साहित्य में कोट, दस्ताने, जूता, मोचीराम, पपीते का पेड़ आदि नाना प्रकार के विषयों पर कविताएँ लिखी जाने लगी और उनका सिलसिला आज भी जारी है। इसी प्रकार कोंकणी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी लेखन का दौर शुरू हुआ। महाले की घर, *बाजार, वाट, बूट, जनेल, आयतार, पगार, घर, सत्री, पावस, कालाय तस्मै नमः, मर्यादा, बीं* आदि कविताएँ जीवन और परिवेश के विभिन्न भावबोधों को व्यक्त करती हैं।

पगाराचो पयलो दीस
आगळो वेगळो
उमेदीचो
हॅपी बर्थ डे कसो
मुखामळार हांसो

सुनील ह. पालकार ने *नागीण* (कविता संग्रह), *रंगमंच* (एकांकी संग्रह), *राष्ट्रज्योत* और *घुडी लागली रे* (देशभक्ति गीत-संग्रह) के बाद 2012 में *घसघसो* नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 140 कविताएँ संकलित हैं जिसमें गोवा के जीवन परिवेश, प्रकृति एवं संस्कृति के प्रति लगाव और प्रेम को झरने जैसी फुहारों के साथ व्यक्त किया गया है। दरअसल 'घसघसो' का अर्थ है जलप्रपात। *गोंय म्हजें* शीर्षक कविता में गोवा की खासियत का बयान इस रूप में हुआ है।

गोंय म्हजें भाट,
काजू, आंबे, पणसांचे
कुळागर तें पानवेलीचें
माड माडयांचें
जय सकाळसांज जेवणाकडे
रुचीक हुमण नुस्त्याचें
तें गोंय म्हजें....

कवि ने जीवन-जगत की अनुभूतियों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। संसार में किसी के घर में खुशियाँ हैं तो किसी के घर में दुःख का वातावरण छाया हुआ है। देश में घटित होने वाली नाना प्रकार की आपदाएँ जहाँ किसी के घर दुःख का माहौल उत्पन्न करती हैं, वहीं पर जीवन में इच्छित उपलब्धि पा लेने पर किसी के घर में खुशियाँ ही खुशियाँ बरसने लगती हैं।

तुज्या घरा कुशीक
म्हाका घर बांदूक जाय
पोरसाक पोरसूं
तेंकूनच आसूंक जाय
शीम म्हज्या घराची
शिमेक तुजे तेंकय

गोपिनाथ विष्णु गांवस का 50 कविताओं का संकलन *घोले घोले* नाम से प्रकाशित हुआ जिसकी भूमिका में प्रकाश पर्येकार ने इसे 'विद्रोही सूर घेवन

आयिल्ली कविता' कहा है। इनकी कविता सामाजिक जीवन में व्याप्त ढोंगी स्वभाव, अन्याय, लाचारी, दुर्बल मनुष्य की मजबूरी आदि का चित्रण करती है। राजकारण में व्याप्त विसंगतियों का भी उल्लेख किया गया है।

आमच्या सारक्यां
जगपा सारख्यां
आतां कांय उरांक ना
तरीय आमी जगतूंय
आमच्या सारक्यां

इस संग्रह की अन्य कविताएँ *झाडपण, प्रेमच, यादींचो पावस, तीं झाडा, माती, मियां वगी वगी, ट्रॅक... ट्रॅक.... ट्रॅक, जगाप, दायज* आदि कविताएँ रोजमर्रा के अनुभवों पर आधारित हैं। इनकी अंतिम कविता *दायज* की खास बात यह है कि यह सडी और दादा के बीच संवाद के माध्यम से लिखी गई है।

सडी : *दादा, आतां*
आमचे वसरे, वायनां....
आमचे बसकलीचे सपे, बांकडे...
आमचीं दारांतली खळीं,
दादा : *हय, तर!*
माजो शाणो तो
खूंयसून शिकान येयला रे?

इस वर्ष महिला कवयित्रियों में नीला तेलंग दूसरी महिला हैं, जिनका *शून्यातल्यान शून्याकडेन* नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इन्होंने जीवन परिवेश के छोटे-छोटे से अनुभवों को छोटी-छोटी कविताओं के माध्यम से शब्दबद्ध किया है। इनकी *शून्य, समारंभ, सत्ता, दो या तीन, अस्तित्व, अपमान, पावस, जीण, चद्रांक, मोग* आदि छोटी-छोटी कविताएँ विभिन्न भावबोधों को व्यक्त करती हैं। कवयित्री ने 'अस्तित्व' एवं 'माया' नामक छोटी-सी कविता में क्रमशः महाभारत के अर्जुन और कर्ण के युद्ध का वर्णन

एवं दो महारानियों के सद्गुणों का उल्लेख किया है-

कर्णाचेर बाण सोडलो / आनी अर्जुन सोंपलो
पांच पुतांचें अभय / कर्णाच्या अस्तित्वाचो उदय।
सत्यभामे! तूं सदगुणांची पुतल्ली
म्हज्या मनाची राणी रुक्मिण भोल्ली।

अजय ज्यो. बुवा के *एस.एम.एस.* और *बांवरी राधिका* नामक दो कथा-संग्रह और एक *प्रस्नाचिन्नां* एकांकी के बाद इनका *म्हज्या कवितांची डायरी* काव्य संग्रह 2012 में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत कविता संग्रह में 77 कविताएँ गोवा के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक जीवन पर लिखी गईं हैं। तुजें रूप में नारी का सौंदर्य कवि के तन-मन में बस जाता है जिसकी अनुभूति वह अपनी इंद्रियों के माध्यम से भी करता है।

मन
हालून गेला
तन चंवरून गेलां
पयसुल्लें
तुजें रूप
नदर
भरसून गेलां

इसके अतिरिक्त *स्वातंत्र्याचें अस्तित्व, सासाय, सपनां शब्द, म्हजो गांव दुकां, पयस खूब, गोमंतक* आदि अन्य विषयों पर आधारित कविताएँ हैं। *म्हज्या गांवचो पावस* नामक कविता में पावस ऋतु के वर्णन के साथ-साथ रामायण, महाभारत और पौराणिक पात्रों और संदर्भों का वर्णन किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से श्रीकृष्ण, द्रौपदी, सीता, उर्वशी, मेनका आदि नामों का उल्लेख हुआ है।

सीतेच्या रूपावरी
द्रौपदीच्या वस्त्रावरी
विणेची झंकार घेत

बाळकृष्णावरी धावत येता...
म्हज्या गांवचो पावस

कोंकणी भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार गोवा से लगी हुई कर्नाटक और केरल की कोंकण पट्टी तक है। कोंकणी की पाँच बोलियाँ हैं जोकि यहाँ से केरल तक बोली जाती हैं। कोंकणी की अपनी लिपि कन्नड और मलयालम में भी है। केरल के दूसरे महत्वपूर्ण कवि शरतचंद्र शेणै को कोंकणी और मलयालम भाषा पर समान अधिकार है। उन्होंने *गीतसरोवर* नामक पुस्तक में कोंकणी गीतों का अनुवाद मलयालम भाषा में भी किया है। इसमें *भारतभूमि, जागरण, कोंकणीची सर्शि, देवी मंदिर* आदि नाम से 17 गीतों का संकलन है। 'जागरण' शीर्षक गीत में उनका कोंकणी प्रेम इस रूप में व्यक्त हुआ है।

जाग कोंकणी, नींद सोणु उद्टा तूं,
फाल्लें जाल्लें संत दोळे विस्कळाय तूं।

इस संग्रह की खास बात यह है कि इसमें प्रथम पृष्ठ पर मलयालम लिपि में लिखी गई कविता का अनुवाद दूसरे पृष्ठ पर दिया गया है। *दी दर्शन* कविता में भगवान श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन करते हुए कवि उनके दर्शन की कामना करता है-

गोविंद तूंचि गिरिधारी
मनमोहन तूंचि मुरारी
तूं धरता अनेक रूप
दी दर्शन तें अप्रूप-

कोंकणी भाषा और साहित्य के प्रति समर्पित कवि माधव बोरकार ने *पाँच दसकां कोंकणी कवितेंची* पुस्तक के माध्यम से विगत 50 वर्षों की कोंकणी कविता के वैशिष्ट्य एवं इतिहास को रेखांकित कर एक अदभुत कार्य किया है। इसके अंतर्गत जिन कवियों की कविताओं को संकलित किया गया है उनमें प्रमुख रूप से कोंकणी और मराठी के सुविख्यात कवि बाकीबाब बोरकार हैं जिनका कि अभी हाल में संपूर्ण गोवा में जन्मशताब्दी वर्ष मनाया

गया। चूँकि यह आलेख कोंकणी साहित्य के परिचय से संबंधित है, इसलिए मैं विगत 50 वर्षों के प्रमुख कवियों की एक सूची यहाँ दे देना समीचीन समझता हूँ। दिनकर देसाय, र. पंडित, शंकर रामाणी, अभिजित, पांडुरंग भांगी, नागेश करमळी, चा.फ्रा. द कोश्ता, मनोहरराय सरदेसाय, जे.बि. मोरायश, जे.बि. सिकेरा, उदय भेंब्रे, हरदत्त खांडेपारकार, जेस फॅर्नादीश, विजयबाय सरमळकर, शंकर भांडारी, रमेश वेळुस्कार, प्रकाश पाडगांवकार, शंकर पर्ळकार, भिकाजी घाणेकार, पुंडलीक नारायण नायक, प्रकाश गंगाराम थळी, मनोराय नायक, तुकाराम शेट, प्रकाश दत्ताराम नायक, अरुण साखरदांडे, निलबा खांडेकार, भरत नायक, सजिव वेरेंकार, गजानन रायकर, सखाराम गोंविद शेणवी बोरकार, नूतन साखरदांडे, नयना आडारकार, माया अनिल खरंगटे, निला तेलंग, ग्वादालूप डायस, रूपा कोसंबी, सोनिया सुभाष शाह, शाबा कुडतरकार, संहिता कुलकर्णी, योगिन आचार्य, सुरेश जयवंत बोरकार, दिलीप बोरकार, आर.एस. भास्कर, शरतचंद्र शणै, सु.म. तडकोडकार, बाळकृष्ण कानोळकार, सुदेश शरद लोटलीकार, नरेंद्र बोडके, परेश नरेंद्र कामत, मनोज नरेंद्र कामत, युसुफ अ. शेख, अशोक भोंसलो, भालचंद्र गांवकार, मॉव्रिस दसा, प्रसाद लोलयेंकार, दुर्गादास दत्ता गावडे, अरुणा राव, अनंत साळकार, इंदू गिरसप्पे, मीरा काणकोणकार शिरोडकार, पुर्णानंद च्यारी, सुनील पालकार, राजय रमेश पवार, मार्कोस गोन्साल्वीस, सुशिला नि. हळर्णकार, यशवंत केळेकार, शितल रूपेश भंडारे, फा. लिनो द सा, रवींद्र रमाकांत म्हाड्डोळकार, राजश्री शैल, चंद्रिका चंद्रमोहन पाडगांवकार, राधा भावे, रमेश घ. लाड, मिनीन आल्मेदा, सोतेर बारेंत, काशिनाथ शांबा लोलयेंकार, आर. रामनाथ, तोमाझिन्यु कार्दोज, माधव बोरकार।

यहाँ मैंने उक्त काव्य-संदर्भों के माध्यम से कोंकणी कविताओं के विविध स्वरूपों का उल्लेख किया है। कोंकणी कविता के विषय और भाषिक संरचना को लेकर कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं हुआ है। जैसे अन्य भाषाओं में रोजमर्रा की परिवेशगत जिंदगी के अनुभवों को कविता का विषय बनाया जा रहा है, वैसे यहाँ भी। कतिपय काव्य संग्रहों में कविता को नाट्यरूप में लिखा गया है। इसे कोंकणी कविता में एक नई पहल कह सकते हैं।

कोंकणी कथा साहित्य

21वीं सदी के दूसरे दशक में लगभग सभी भारतीय साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य का लेखन कविता की तुलना में अधिक हो रहा है। इस प्रभाव से कोंकणी साहित्य अछूता नहीं है। कथा साहित्य में भी कहानी विधा का लेखन शीर्ष पर है। वर्ष 2012 में मुझे गुरुदास भा. नाटेकार का एकमेव उपन्यास *मॉड वेता तेत्रा* (जिसका अर्थ है- जब एक तूफान आता है) प्राप्त हुआ। वस्तुतः उपन्यास की कथावस्तु एक छोटे से परिवार की है तथा 1965-66 के बीच घटित सत्य घटना पर आधारित है। इसे लेखक ने अपने मित्र या किसी से सुना था। उपन्यास का पात्र रामा गवंडी अपनी पत्नी रेशमा को आर्थिक मजबूरी के कारण परपुरुष के साथ सहवास करने की स्वीकृति देता है लेकिन इस बात को हृदय से स्वीकार न कर कुंठाग्रस्त जीवन जीता है। इसके कारण उसके छोटे-से परिवार में तूफान आ जाता है, जिसका प्रभाव उसके बच्चों पर पड़ता है। इस उपन्यास के अतिरिक्त शरतचंद्र शेणै के *अनिश्चित* और *परणें घर* नामक दो लघु उपन्यास प्रकाशित हुए।

गोवा के दैनिक मराठी और कोंकणी समाचार-पत्रों में स्तंभ और कहानी लिखने वाली शर्मिला विनायक प्रभू के *अस्तुरी* कहानी संग्रह में कुल 21 कहानियाँ संकलित हैं। *चूक कोणाची, एक धागो दुख्खाचो, नवी वाट, नवी दिशा, सूख, रंजना* आदि शीर्षक कहानियाँ लेखिका के जीवन के विभिन्न अनुभवों पर आधारित हैं। चौदह कहानियों का कथा संग्रह *बावरी राधिका* अजय ज्यो. बुवा की चौथी रचना है।

सन् 2004 में *भांगर साळ* नामक कथा संग्रह पर साहित्य अकादमी से पुरस्कृत एन. शिवदास कोंकणी कथा-साहित्य एवं नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। अभी तक नाटक और कथा-साहित्य मिलाकर आपकी लगभग 12-13 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। बाल कथा-साहित्य पर आधारित कथा संग्रह *बाबू* का दूसरा संस्करण इस वर्ष प्रकाशित हुआ है।

इस वर्ष बाल कथा-साहित्य के पाँच नए संस्करण प्रकाशित हुए। उनमें

पहला अलका सिनाय असोळडेकार का *चेतन आनी परी* नामक कथा संग्रह आया जिसमें *दोतोर कोलेदाद, कुमार आनी चानी, आवयची देख, शूर घोडो, मनीस आनी शींव, पाडे नशिबाचो चामटो* आदि शीर्षक से कुल 24 कहानियाँ संकलित हैं। विशाल शेणवी खांडेपारकार का *देखदिण्यो काणुल्यो* नामक दूसरा कथा संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें कुल छोटी-छोटी 60 बाल कथाएँ हैं। यहाँ मैं *बैल आनी हुंदिर* (चूहा) शीर्षक कहानी का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं- "*एक हुंदिर आसलो। ताणें एक दीस एका बैलाच्या पायांक घांस मारलो। तसोच बिलांत वचून लिपलो। ताणें बैलाक म्हणलें : जसो एका रुखा मुखार एक ताळकिलो तसोच तुज्या मुखार हांव। तुज्या पायांक हांव चाबलों। तरी तुका कांयच करपाक जमलें ना। म्हाका तुजी कींव आयली। इतल्यान बैलान म्हणलें : क्षुद्र वृत्तीच्या जनावरांक दुस-याचें बरें करपाक जायना। तरी वायट करपाची वान्सा मात खूब आसता। तशेंच तुजें जालां। देख : विनाकारण दुसच्याक त्रास करचे न्हय।*" (अर्थात् एक चूहा था। उसने एक दिन एक बैल के पैर को काटा। उसके पश्चात् बिल में जाकर छुप गया। उसने बैल से कहा जैसे एक पेड़ एक पेड़ के सामने छोटा-सा बिरवा होता है, वैसे ही मैं तुम्हारे सामने हूँ। मैंने तुम्हारे पाँव को काटा फिर भी तुम कुछ नहीं कर सकते। मुझे तुम पर घृणा आती है। इतना कहने पर बैल ने उससे कहा कि नीच प्रवृत्ति के जानवर दूसरों का भला नहीं कर सकते लेकिन बुरा करने की आदत खूब होती है। वैसे ही तुम हो। देखो, बिना किसी कारण के दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए।)

इसी क्रम में सरस्वती नायक का *पिंकू वास्वेल आनी भुरगो*, दीपा मुरकुंडे का *अर्शी आमी भुरगीं*, रमा मुरकुंडे का *चानुच्यो काणयो* और सतीश दळवी का *चिरमुल्यो बालकाणयांची झेलो* बाल कथा संग्रह प्रकाशित हुए। सुनेत्रा जोग ने सुधा मूर्ति की अंग्रेजी में लिखित "How I taught my grandmother to read & other stories" 24 कहानियों का अनुवाद कोंकणी में *आजयेक वाचूंक शिकयलें आनी हेर काणयो* नामक शीर्षक से किया। इस साल की बड़ी उपलब्धि यह रही है कि भालचंद्र गांवकार, अंजू साखरदांडे और

नित्यानंद नायक ने कोंकणी कथा-साहित्य के शीर्ष कथाकारों की कहानियों का संकलन *प्रातिनिधीक कथा झेलो* नाम से प्रकाशित किया। इसके अंतर्गत चंद्रकांत केणी की *नाते रगताचें*, दामोदर मावजो की *भुरगीं म्हगेलीं तीं*, महबळेश्वर सैल की *रोबोटीक वॉरफॅर*, पुंडलीक नायक की *आग्निदिव्य*, एन. शिवदास की *भूककांप*, मीना काकोडकार की *नवो जल्म*, शशांक सिताराम की *सत्री*, शीला कोळंबकार की *खेल*, गजानन जोग की *शाणो राम*, हेमा नायक की *वेगळीं मनशां*, एडविन जे.एफ. डिसौझा की *चॉकलेटां*, जयंती नायक की *शारदाम्मा*, गोकुळदास प्रभु की *खतां*, मधुसूदन जोशी की *यमा म्त्सो राव*, वसंत भगवंत सावंत की *डॉल्फी*, प्रकाश पर्येकार की *चंद्रकोर*, ज्योति कुंकळयेंकार की *काळजाचो घोंटेर*, भालचंद्र गांवकार की *कंवळें मन*, माया खरंगटे की *कांटयाळे हार*, दुर्गादास गावडे की *धी मर्डर* आदि कहानीकारों की कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के माध्यम से विगत 25 वर्षों से कोंकणी कहानियों के स्वरूप को परखा जा सकता है।

कोंकणी नाटक एवं एकांकी

गोवा की भूमि नाटक और तियात्र के लिए बहुप्रसिद्ध है। पुर्तगाली शासन के दौरान यह गोवा के जनमानस के मनोरंजन का प्रमुख साधन था। गोवा मुक्ति के 52 वर्षों के बाद भी यहाँ प्रत्येक वर्ष अखिल गोवा नाट्य प्रतिस्पर्धा एवं मंदिरों और गिरिजाघरों में विशेष रूप से तियात्र का आयोजन किया जाता है। यहाँ कोकणी की विभिन्न विधाओं के लेखन में नाटक एवं एकांकी का लेखन संभवतः अधिक होता है। कोंकणी साहित्य को समृद्ध करने में भरत नायक का प्रमुख स्थान है। कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी लगभग 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष आपका दो अंकों का 'भायर-भितर' नाटक आया। प्रस्तुत नाटक में एक शहर की लडकी की शादी एक पिछड़े हुए गाँव के परिवार में कर दी जाती है। वह उस परिवार के लोगों के संस्कारों और उनकी मानसिकता से किस प्रकार जूझती है? इस संपूर्ण कथा का ताना-बाना सुरेश, शाली, सुमित्रा, राजेश, सखाराम और कुली पात्रों के माध्यम से बुना गया है।

गौतम व. गांवस ने, लगता है, '3 इडियट्स' के आधार पर '4 इडियट्स' विनोदी नाटक की रचना की। समाज को कुछ अच्छा संदेश देने की भावना से नाटककार के मन में जिन विचारों के बुलबुले उठ रहे थे उन्हीं को विनोदी स्वरूप देकर गांवस ने इस नाटक का सर्जन किया जोकि 2010 में गोवा कला अकादमी में मंचित किया गया था जिसे दर्शकों ने काफी सराहा। ॲड अभिलाषा शिवाजी नायक का भी दो अंकों का विनोदी नाटक *नेण्टीं ती नेण्टीं, जाण्टी कितें कमी?* नाम से प्रकाशित हुआ। महेश चंद्रकांत नाईक का दो अंकों का नाटक *आदार एअरलाइन्स* मूलतः विमान के अंदर होने वाली महिलाओं की संपूर्ण गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।

संजय नंदा फाळकार का *ॲक्च्युअल फॅक्च्युअल!!* दो अंकों का विनोदी नाटक है। यह एक कौटुंबिक नाटक है जिसमें एक परिवार का लड़का गाँव की शिक्षा प्राप्त कर मुंबई जाता है। वहाँ उसके सपने में परवीन बॉबी आती है और फिर यहीं से नाटक की शुरुआत होती है। मिलिंद हरिश्चंद्र काकोडकर सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर विनोदपूर्ण नाटक लिखने वाले नाटककार हैं। इस वर्ष इनका 'पुतळयाचें अनावरण' नामक दो अंकों का नाटक प्रकाशित हुआ जोकि मूलतः मनोरंजन पर आधारित है। धार्मिक परंपरा का अनुसरण करते हुए प्रो. संजय रोहिदास गोवेकार का 'धर्तरेवेलो देव श्री साई' नाटक साईं बाबा की महिमा को रेखांकित करते हुए लिखा गया है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के बंगाली नायक 'विसर्जन' का अनुवाद प्रसिद्ध कोंकणी लोककथाकार डॉ. जयंती नायक ने उसी शीर्षक से किया है। चा. फ्रा. दे कोस्ता के दो नाटकों *मागीरचें मागीर* और *तर्नें तर्नें मोर्नें* का दूसरा संकरण इस वर्ष प्रकाशित हुआ।

कोंकणी एकांकी की परंपरा में अजय ज्यो. बुवा का *डार्लींग अबोड, सॅमीसर्कल, प्रस्नचिन्नां, सासणाचीं, ए फॉर एडम, ए फॉर एपल, ए फॉर एड्स* और *राजिनामो* नाम से पाँच एकांकियों का संकलन *प्रस्नचिन्नां? सासणाचीं?* शीर्षक से आया। नरेंद्र काशिनाथ कामत ने *गर्भवायटी, लागणूक* और *उंवाळणी* नामक तीन एकांकी को *गर्भवती* शीर्षक से प्रकाशित किया। इसी प्रकार रत्नमाला दिवकार ने चार एकांकी *परयांचो देस, डस्टबिनाचो वाडदीस,*

के-ए-टी कँट, *चिरमुल्यांचे लाडू* का संकलन *परयांचो देस* नाम से निकाला। चा. फ्रा. दे. कोस्ता के *सुर्णे माजर हासता* एकांकी संग्रह की दूसरी आवृत्ति प्रकाशित हुई। हनुमंत चोपडेकार के संपादन में 21वीं सदी के *सरफरोसी की तमन्ना*, *भूंयगर्भ*, *उपरें*, *किळांच*, *वळख* इन पाँच एकांकियों का संकलन *21व्या शेंकडयांतली आधुनीक कोंकणी एकांकी* शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

कोंकणी साहित्य की अन्य विधाएँ

इक्कीसवीं सदी में हिंदी एवं कतिपय अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की मेजर विधाओं की तुलना में अन्य विधाओं के साहित्य को काफी लोकप्रियता मिली है जिनमें मूलतः आत्मकथा और संस्मरण का साहित्य प्रमुख है। कोंकणी साहित्य की अन्य विधाओं में निबंध विधा में सुमेधा कामत देसाय का *पालवा पान* ग्यारह निबंधों का संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके अंतर्गत शीर्षक निबंध के अतिरिक्त मंगल *मंगल स्नान*, *कुंकुमं शोभनं रम्यम*, *दोन दोळे काजळाचे*, *मणी-मंगलसूत्र*, *कंकणं करभूषम*, *तूप-लोपी*, *मसाल्याचें तोणाक*, *वायंग्याचें भर्त*, *एका पोसाची काणी* और *भक्ष्य आनी अभक्ष्य* आदि निबंध संकलित हैं। *कुंकुमं शोभनं रम्यम...*, निबंध में लेखिका का मत है- "*बायलांनी सौभाग्यवृध्दीखातीर कुंकुमदान करचें अशें शास्त्रांत सांगलां। त्या दानचो मंत्र 'दानचंद्रिक्कें' त दिलां।* (अर्थात् औरतों को सौभाग्य की वृद्धि के लिए कुंकुम दान करना चाहिए, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है।)

हनुमंत चोपड़ेकार ने 'संवसारीक नामनेच्यो अस्तुच्यो' नामक निबंध संग्रह में देश के विभिन्न क्षेत्रों में ख्यातनाम हस्ताक्षरों के गुण का गुणगान किया है जिनमें प्रमुख रूप से क्लियोपात्रा, रानी लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा, मेरी क्यूरी, इंदिरा गांधी, लता मंगेशकर, पी.टी. उषा, कल्पना चावला आदि हैं। हनुमंत चोपडेकार और अमिशा शिरोडकर के संपादकत्व में *बळख फुलांची* संग्रह में *आँवला*, *सुरंगा*, *सूर्यफल*, *रातरानी*, *गुलाब*, *जास्मिन*, *पारिजात*, *कर्नी* आदि 19 विभिन्न फूलों के महत्व एवं उनकी विशेषताओं को रेखांकित किया गया है। कोंकणी *जाग* की संपादिका डॉ. माधवी सरदेसाय ने *मंथन* शीर्षक से 13

कोंकणी लेखों का संकलन प्रकाशित किया है जिसमें कोंकणी के शणै गोंयबाब, रवींद्र केलेकर, मनोहरराय सरदेसाय आदि ख्यातनाम रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त सार्त्र, कुन्या, राममनोहर लोहिया आदि के योगदान की चर्चा की गई है।

संदीप मणेरीकर ने *गजाली* नाम से *मालवणी इनोदी व्यक्तिचित्रणां* के अंतर्गत 23 विनोदी चित्रणों को व्यक्त किया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए भी श्री अरविंद भाटीकार का कोंकणी भाषा और साहित्य के प्रति लगाव बना रहा। सेवामुक्त होने के बाद आप कोंकणी भाषा और साहित्य की सेवा में लग गए। सन् 2012 में आपका *गौवळां* नामक आत्मचरित्र प्रकाशित हुआ। लक्ष्मण काशिराम म्हांबरे की गीत-संगीत संबंधी विविध अनुभवों की पुस्तक *आत्मानुभव* एवं स्नेहा संजीव वेरेंकार की यात्रा साहित्य से संबंधित *यादींतलो प्रवास...* तथा युगा आडारकार की विभिन्न स्थानों के अनुभवों से संबंधित पुस्तक *म्हज्या पावलांच्यो कुरवो....* प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त जय उत्तम नायक की *शिरगांवची सासाय*, एन. शिवदास की *धर्मायण* और अनुवादक सीताराम चंद्रकांत नाईक एवं मनोहर द. कोरगांवकार के संपादकत्व में *सुलभ रामायण* नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा में मराठी साहित्य और संस्कृति के प्रभाव के कारण यहाँ मराठी समाचार-पत्रों की संख्या अधिक है। पुर्तगीज शासन के बाद भी यहाँ के कार्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं में अंग्रेजी का बोलबाला रहा है और आज भी है। गोवा में अंग्रेजी समाचार-पत्र खूब पढ़े जाते हैं। इसका कारण है कि यहाँ अन्य भाषा-भाषियों की संख्या भी काफी मात्रा में है। कोंकणी का एक मात्र समाचार-पत्र पणजी से 'सूनापरांत' प्रकाशित होता है।

गोवा आर्थिक रूप से संपन्न होने के कारण यहाँ सड़क, बिजली और पानी की सुविधा गाँव के सुदूर अंचलों तक है। यही कारण है कि जनसंचार के मुद्रण एवं इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रचार-प्रसार व्यापक पैमाने पर है।

कोंकणी पत्रिकाओं की बात की जाए तो स्थिति बहुत अच्छी है। प्रो. माधवी सरदेसाय एवं श्री दिलीप बोरकार के संपादकत्व में *जाग* और *बिंब* नामक मासिक पत्रिकाएँ नियमित प्रकाशित हो रही हैं। *जाग* कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं की पत्रिका है। इसमें कोंकणी कविता, कहानी, लेख, समीक्षाएँ, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं का प्रकाशन होता है। इसके अलावा श्री तुकाराम शेट *कोंकण टायम्स* और गोकुलदास प्रभु *ऋतु* नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन नियमित रूप से कर रहे हैं। *कुळागर*, *जैत*, *शोध*, *उर्बा*, *बारदेश*, *युवांकुर* आदि नियमित-अनियमित पत्रिकाएँ छप रही हैं।

पुरस्कार

काशीनाथ शांबा लोलयेंकार को 2012 का साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का पुरस्कार उनकी पुस्तक *काव्यसूत्र* काव्य संग्रह के लिए प्रदान किया गया। गोवा कोंकणी अकादमी ने 28 मार्च 2012 को श्री राजेंद्र आर्लेकार, सभापति, गोवा विधानसभा की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि ख्यातनाम पंजाबी कवि श्री सुरजीत पातर की उपस्थिति में कोंकणी साहित्य और भाषा सेवा पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। सर्वोत्कृष्ट कोंकणी साहित्य / ग्रंथ पुरस्कार की सूची में *शुभंकर* (कविता), श्री परेश नरेंद्र कामत की *तळाचो फातोर* (उपन्यास), श्री रामनाथ गावडे की *राजकुंवर शेणला* (एकांकी संग्रह), श्री कवींद्र फळदेसाय की *कोडू कसाय-गोल गुळी* (निबंध संग्रह), डॉ. मधुसूदन जोशी की *अक्षर सरिता* (समीक्ष), डॉ. किरन बुडकुले की *एक आसली आजी* (बालसाहित्य), श्रीमती माया खरंगटे का नाम सम्मिलित था। गोंयांभायल्या लेखकाक साहित्य पुरस्कार *संकल्प* (कविता) श्रीमति इंदू गेरसप्पे को दिया गया। कोंकणी भाषा सेवा पुरस्कार के अंतर्गत युवा चैतन्य पुरस्कार क्रमशः श्री दामोदर मावजो एवं श्री नागेश सोंदे को दिया गया। इसी प्रकार शणै गोंयबाब कोंकणी भाषा सेवा तथा माधव मंजुनाथ शानभाग कोंकणी भाषा सेवा एवं कोंकणी सेवा संस्था पुरस्कार क्रमशः श्री आंतोन पियेदाद मोरायस, फा. मार्क वॉल्डर और अंत्रुज लळित, बांदोडें-फोंडे को प्रदान किया गया।

कला अकादमी के अध्यक्ष श्री विष्णू सूर्यावाघ की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि नामवंत मराठी साहित्यकार प्राचार्य डॉ. यशवंत पाटणे (सतारा) की उपस्थिति में 26 अप्रैल 2012 को कला अकादमी गोवा का साहित्य पुरस्कार *तळाचो फातर* (उपन्यास), श्री रामनाथ ग. *गावडे तथा ओझे* (कथा संग्रह) के लिए श्री विठ्ठल गावस को दिया गया।

अन्य गतिविधियाँ

कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन हेतु गोवा में कई संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। यहाँ वर्ष 2012 में कोंकणी भाषा और साहित्य से संबंधित बहुत से आयोजन किए गए उनमें से कतिपय का उल्लेख किया जा रहा है। गोवा के ख्यातनाम साहित्यकार, कवि एवं विधायक श्री विष्णू सूर्यावाघ की *सूदिरसूक्त, नचिकेतस, तीन पेशांचो तियात्र, शांततेचे घण, मी बाई मीच आहे!, रक्तपर्जन्य* छह मराठी एवं कोंकणी रचनाओं का लोकार्पण 12 मार्च 2012 को संपन्न हुआ। कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष श्री पुंडलीक नारायण नायक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा श्री किशोर कदम उर्फ सौमित्र मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। श्री पुंडलीक नायक की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि श्री विष्णू सूर्याबाघ की उपस्थिति में 7 अप्रैल 2012 को *परयांचो देस* (बाल एकांकी झेळो) रत्नमाला दिवकार, *चिरमुल्यो...* (बाल काणयां झेलो) सतीश दळवी, *21व्या शेंकड्यातली आधुनिक कोंकणी एकांकी* (एकांकी झेलो) हनमुंत चोपडेकार, शाबा कुडतकर, प्रशांती तळपणकर, मार्कूस गोंसाल्वीस और कविंद्र फळदेसाय आदि रचनाकारों की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

इंस्टिट्युट मिनेझिम ब्रागांझा, पणजी ने 23 मार्च 2012 को राष्ट्रीय बहुभाषी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें देश के विभिन्न भागों से मराठी, हिंदी, मलयाल्लम, राजस्थानी, गुजराती, उर्दू एवं स्थानीय कोंकणी कवियों ने भाग लिया। श्रीमती हेमा नायक ने डॉ. भालचंद्र मुणगेकर की मराठी आत्मकथा का कोंकणी अनुवाद *हावं असो घडलों* नाम से किया।

3892 CHD/14—6A

इसका लोकार्पण राज्यसभा के सदस्य श्री शांताराम नायक की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष श्री राजेंद्र आर्लेकार की मौजूदगी में 4 जुलाई, 2012 को किया गया। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा रवींद्र भवन, मडगांव के संयुक्त तत्वावधान में 9 नवंबर, 2012 को बहुभाषी कवि-सम्मेलन का आयोजन श्री विनोद जोशी एवं श्री वासदेव मोही की अध्यक्षता में किया गया। इसमें मराठी, गुजराती, कोंकणी और सिंधी भाषा के कवियों ने भाग लिया।

कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन की दृष्टि से वर्ष 2012 काफी सक्रिय रहा। विगत वर्षों की भांति कोंकणी की विभिन्न विधाओं का साहित्य प्रकाशित हुआ जिनमें परंपरागत और समसामयिक जीवन एवं साहित्य मूल्यों को बराबर ध्यान में रखा गया है।

□□□

3892 CHD/14—6B